# आत्म सम्बन्धी सुन्दर साथ

–श्रीमती अनिता खुराना, जयपुर ।

सुन्दर साथ–साथ जो सुन्दर है, क्या शरीर से ? नहीं अपितु मन व आत्मा से जो उस सच्चिदानन्द (सत्–चित–आनन्द) के अंग स्वरूप हैं वही सुन्दर साथ के नाम से सम्बोधित किये गये हैं। यह नाम मूल परमधाम से स्वयं श्री राजश्यामा जी ने इस ब्रह्माण्ड में जब श्री देवचन्द्र जी को श्री श्याम जी के मन्दिर में दीदार दिया तब ही बताया कि तुम सुन्दर बाई की वासना हो और इस ब्रह्माण्ड में खेल देखने आई हो, अब अपने साथ को लेकर धाम जाना है। यह शब्द केवल इस प्रणामी धर्म में या निजानन्द सम्प्रदाय में देखने में मिलता है क्योंकि श्री प्राणनाथ जी ने कभी कहीं भी किसी को भी अपने साथियों के अलावा और कोई सम्बन्ध नहीं बताया, उन्होंने सबको अपनी आत्मा का साथी ही स्वीकार किया है चूंकि आत्मा कभी छोटी–बड़ी या ऊँची–नीची नहीं होती वह तो अजर अमर एक रूप है।

गुण कई प्रकार के होते हैं—शारीरिक, मानसिक व आत्मिक। क्योंकि यह सम्बन्ध आत्मिक है अतः हमें केवल आत्मिक गुणों की ओर ही उन्मुख होना चाहिए यह पाँच तत्व का शरीर तो अवगुणों और विकारों से ही भरा हुआ है।

फिर सवाल यह उठता है कि इन आत्मिक गुणों की पहचान इस मायावी शारीरिक दृष्टि से कैसे हो ? तो वह तो फिर सिर्फ श्री जी की अपार मेहर से इस नश्वर शरीर पर जब जाग्रत बुद्ध का चश्मा चढ़ जाता है तो फिर इन शरीरों के और माया के विभिन्न नातों को भेद कर उस धाम के नाते फिर पहचान स्वमेव हो जाती है।

अन्तिम क्षणों में जब श्री जी महाराज ठाकुर के तन में की गई लीला को समाप्त करने लगे तो उपस्थित सुन्दर साथ ने विलाप करते हुए पूछा था कि अब आप कहां जाओगे तो उत्तर आया था कि मेरा अर्श अब मोमनों का दिल है या सुन्दर साथ में मुझे ढूंढ़ना—

दिल मोमन के आय के,
अर्स कर बैठे खसम।



Nijanand App

'श्रीमुखवाणी' में बार-बार यही लिखा गया है कि जिन्होंने मेरे संग रह कर आत्मा जगा ली और धनी की पहचान कर ली वे तो धन धन हैं लेकिन अभी जागनी का काम मोमनों को सौंपा गया है और उनके लिये वाणी छोड़ रहे हैं— पिछले कारण वाणी कहीं' फिर यह भी कह दिया कि मैं तुम्हारे जैसे वजूदों में तुम्हारे बीच रहूंगा पर तुम पहचान नहीं कर पाओगे चूंकि यह वजूद और दृष्टि माया वाली होगी, इस पर माया का रंग कई परतों में चढ़ा होगा। फिर आगे चलकर 'सिनगार' के प्रथम प्रकरण के प्रथम चरण में कहा कि आशिक की रूह ही राजी के चरण हैं और वह इन चरणों की आशिक है—आशिक इन चरण की आशिक की रूह चरण तो स्वयं सिद्ध है कि राजश्यामा जी इसी सुन्दर साथ में ही विद्यमान हैं—'न जाने इस झुण्ड में कौन सुहागिन हो' तो सुन्दर साथ की सेवा और प्रेम भाव स्वयंमेव ही उस धनी को पहुंच जायेगा। सुन्दर साथ के महत्व का परिचय तो श्री बीतक साहब और 'श्री मुखवाणी' से हो जाता है कि किस प्रकार स्वामी जी जिनको (पूर्ण ब्रह्म परमात्मा घोषित किया गया था) शरीरों के भेद भाव व जात-पांत के बन्धनों को मिटाकर आत्मा से विभिन्न जातियों के प्राणियों को अपना कर अपना साथी रूप देते थे। कहीं भी उन्होंने यह नहीं कहा कि यह किसी एक समूह विशेष का सम्प्रदाय या धर्म है, वह परमात्मा ही नहीं जो किसी एक समूह या जाति विशेष का हो। वह तो सम्पूर्ण मानव जाति का एक ही खुदा है और वही अक्षरातीत हो सकता है।

श्री प्राणनाथ जी की अखण्ड वाणी की तो महिमा ही और है, यह तो यहां के चौदह लोक में पसरे हुए धर्मों की ही मुख्य बात है कि मानव सेवा धर्म सर्वोच्च है। कहा है न कि खुदा को तो सब याद करते हैं पर कुछ को खुदा स्वयं याद करते हैं जो उसके बन्दों को प्यार करते हैं। ईसा की जीवन गाथा का यह सर्व प्रचलित किस्सा है कि वे खुदा को कभी याद नहीं करते थे वरन मानव जाति की सेवा और उनसे प्रेम करते थे तो स्वयं खुदा ने उन्हें पैगाम भिजवा कर अपने पास बुलाया था। कहा जाता है न जिन्नांदी एथे लोड़ होंदी है उन्नांदी रब्ब नूं वी लोड़ होंदी है। इसी बात का संदेश स्वामी जी भी अपनी रूहों व साथ को बारम्बार देते हैं और सब कुछ इच्छाचारी है तो यदि यह कष्ट इन शरीरों के साथ इस माया में लगे हुए हैं तो सेवा की आवश्यकता भी यहीं पर है और इस सेवा का आनन्द केवल संसार में ही प्राप्त किया जा सकता है।

बहुत खेद युक्त हर्षानुभव होता है कि हमारे धर्मावलम्बी जो स्वयं को श्री जी का अंग और साथी अर्थात 'सुन्दर साथ'



Nijanand App

कहलवाते हैं और रहते उससे दूर हैं। या तो यह बता दें कि सुन्दर साथ में भी आत्मा की एक रूपता के हिसाब से परमधाम में कोई छोटा या बड़ा है या धनी ने इस प्रकार के पद परमधाम में बना रखे हैं जिससे एक तो तुच्छ माना जाये और दूसरे को उच्च आसन देकर व्यर्थ की महानता का मौका दिया जाये। जिस वाणी को श्री जी हमारे जीवन में उतरने के लिये फुरमान छोड़ गई हैं उसे हमने सिर्फ पूजा व सेवन का साधन मात्र बना कर रख दिया है। यह ठीक है कि इसी 'कुलजम स्वरूप' से ही हमें सब प्रकाश होते हैं तथा साहब के स्वरूप की पहचान होती है तो एक प्रकार से यह स्वरूप साहब' हो गया लेकिन बाद में हमारे साहब क्या फरमाते हैं उसको अपनी Practical life में उतारना है, न कि केवल उसकी पूजा करके अपने जीवन का लक्ष्य वहीं समाप्त कर दिया जाये और फिर ठेकेदार बन जायें कि हम धर्म के कर्त्ताधर्त्ता हैं। अफसोस कि राजी को तो हम पाना चाहते हैं और उससे प्रेम करते हैं लेकिन उसके अंग 'सुन्दर साथ' से प्रेम करते समय हम धाम के नाते को भूल जाते हैं और वहां दुनिया के नाते-मामे, चाचे, भाई, भतीजे याद आ जाते हैं, क्यों ? क्या यही सुन्दर साथ की पहचान है और यही प्रेम है ? क्या इन्हीं सम्बन्धों को दृढ़ कर हम धनी को और उसके धाम को पा सकते हैं ? क्या केवल बन्दगी से ही धनी शाद हो जायेंगे कि हम इतने घंटे पाठ करते हैं, इतने घंटे सेवा करते हैं और इतनी बार मन्दिरों में जाकर नाक रगड़ते हैं कि हे धनी अब दुनियां में सब पाप कर आये हैं अब तू उनको माफ कर देना क्योंकि वहाँ तो हम अपने आपको दुनियाँ में ऊँचा करने के लिये माया एकत्र करते हैं और लोगों का खून चूसते हैं, वहाँ हम धनाढ्य होकर आपकी सेवा में धन लगाते हैं लेकिन कहना पड़ेगा कि अप्रत्यक्ष रूप में हम वहाँ धन को रिझाने की वनिस्पत पहले उसके बन्दों को दुख ही न पहुंचायें तो फिर इन व्यर्थ की दिखावे वाली सेवाओं की आवश्यकता ही न पड़े, फिर यदि सिर्फ फूल अर्पण करके ही धनी को रिझा लें तो वह अधिक रीझ जायेंगे। धनी के धाम में और उनकी नजरों में न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा। यहाँ माया में रहते हुए धर्म व समाज को सुचारु रूप से चलाने हेतु विभिन्न 'सुन्दरसाथ' को विभिन्न पदों से सुशोभित किया जाता है पर वे उस पद को पाने के बाद अपने पहले वाले सुन्दरसाथ के नाते को भूल जाते हैं और अहं के वशीभूत होकर अपने आपको सुन्दरसाथ का सेवादार कहने की वनिस्बत उस पद की ऊँचाई की आवाज में बोलने लग जाते हैं, जैसे कोई उनको सत्ता प्राप्त हो गई हो सुन्दर साथ पर शासन करने की।



Nijanand App

श्री जी कहते हैं कि—'ज्यों लग रहिए साथ में हो रहिए रेनू समान' लेकिन हमारी प्रबल बुद्धि और आत्मा की गवाही यही कहती है कि—

गोविन्द के गुण गाय के तापर मांगे दान।

हमने भी अपने धनी के नाम पर दान मांगने प्रारम्भ कर दिये हैं। सब एक दूसरे की होड़ में आगे बढ़ने पर लगे हुए हैं। शताब्दी समारोह में यदि ४०८ अखण्ड परायण होने हैं तो हम १००८ करेंगे, क्या इससे ही हमारे धर्म के प्रति सुन्दरसाथ जागरुक हो जायेंगे या वाणी का प्रसार व प्रचार हो जायेगा ? जिन सतगुरु महाराज ने सारा जीवन त्याग और तपस्या और सुन्दरसाथ में प्रेम पैदा करने में और सेवा के महत्व को प्रदर्शित करने में कुर्बान कर दिया। उन्हीं के मूल संदेशों को हम इस रूप में प्रसारित कर रहे हैं कि सुन्दर साथ को ही कुछ चन्द लोगों की प्रतिष्ठा वृद्धि के लिए कुर्बान कर दिया जाये चूंकि इन मेलों, उत्सवों से केवल उनका मुकाबला ही जीतने की तमन्ना है न कि पिया की वाणी द्वारा जागनी के कार्य का उनको दर्द है। जाता किसी का कुछ भी नहीं है केवल इन लोगों की होड़ में बेचारा भावुक सुन्दरसाथ सामाजिक व आर्थिक दोनों दृष्टियों से दब कर रह जाता है। अन्ततोगत्वा सारा भार सुन्दरसाथ पर ही पड़ता है। जब फिर सुन्दरसाथ के महत्व की बात आती है तब वहाँ पर भाई-भतीजा वाद चल पड़ता है। सुन्दरसाथ को राजी का अंग मानकर उनमें समभाव व समदृष्टि रखने से ही हमारे धर्म व समाज की भलाई है। हम बुद्धिजीवियों की क्या यही शोभा है कि धर्म का जो जाग्रत ज्ञान हमारे पास है उसका अन्धानुकरण होने में पूरा-पूरा सहयोग देवें ? स्वामी जी की 'वाणी' में तो सब बातों के लिए ४०० वर्ष पूर्व ही आगाह कर दिया गया है लेकिन निर्भर करता है हम आधुनिक सुन्दरसाथ की भावना और बुद्धि पर।

सुन्दरसाथ के सम्मिलन का अपूर्व दृश्य यदि आज के युग में देखने को मिलता है तो आश्रम 'इन्चोली' में और आश्रम 'शेरपुर' में। भावना के हिसाब से हमारी जानकारी में जितने महात्मा या विद्वान आये हैं उनमें महाराज श्री राम रतन जी, महाराज श्री जवाहर दास जी तथा आद्य युग प्रवर्त्तक श्री जगदीश जी उल्लेखनीय हैं जिनमें वास्तविक रूप में सुन्दरसाथ के प्रति उच्च भाव तथा स्वयं को उनका साथी मानकर चलने वाले महानुभाव हैं।

सत-चिद्-आनन्द के अंग सुन्दरसाथ की महिमा और महत्व का रूप विराट है। लेकिन स्थान और परिस्थितियों का अवलोकन करते हुए इसकी इति यहीं करना उचित प्रतीत होता है। सादर परनाम।

———



Nijanand App